रविवार, दिनाँक **07-07-2024** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

खुद से वायदा

आओ खुद से वायदा करें हाँ वायदा करें।

हम सजन सजनता अपनाएंगे - अपनाएंगे,

हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई एक हैं—हाँ एक हैं,

यह सब को समझाएंगे-समझाएंगे।

आओ खुद से वायदा करें, वायदा करें हाँ वायदा करे।।

ईर्ष्या-द्वेष झगड़े की जड़ हैं, हाँ झगड़े की जड़ हैं,

जो नफ़रत-क्रोध फैलाते हैं,

यह जानेंगे खुद और सब को भी जनाएंगे-जनाएंगे।

आओ खुद से वायदा करें, वायदा करें हाँ वायदा करे।।

आलस्य अनुशासन में बाधा है-हाँ बाधा है,

जो बुद्धि को अचेत बनाता है,

परिश्रम करेंगे और औरों को भी, परिश्रमी बनाएंगे - बनाएंगे।

आओ खुद से वायदा करें, वायदा करें हाँ वायदा करे।।

न बोलेंगे झूठ न देंगे गाली-न देंगे गाली,

चोरी- ठगी भी हम न करेंगे,

हम प्रेमी, निष्काम प्रेम की राह सबको बताएंगे –– बताएंगे।

आओ खुद से वायदा करें, वायदा करें हाँ वायदा करें।।

सम-सन्तोष साथी होंगें- हाँ साथी होंगे,

सच्चाई-धर्म शांति के हथियार,

धैर्य शक्ति अपनाकर हम श्रेष्ठ बन जाएंगे-बन जाएंगे।

आओ खुद से वायदा करें, वायदा करें हाँ वायदा करें।।

गुरुजन व माता-पिता का आदर करेंगे-हाँ आदर करेंगे।

बहन-भाईयों से बेहद प्यार,

एक हो खुद यही पाठ सब को पढ़ाएंगे-पढ़ाएंगे।

आओ खुद से वायदा करें, वायदा करें हाँ वायदा करे।।

इस संदर्भ में सजनों आज सबने खुद से वायदा करना है कि आज से पहले जो गलती हुई सो हुई, लेकिन आज के पश्चात हम अपने आहार-विचार व व्यवहार में सात्विकता का भाव अपनाएंगे और तद्नुकूल ही अपने मन-वचन-कर्म को साध लेंगे। जानो, एक बार खुद से वायदा कर लिया और फिर यदि इसके प्रतिकूल कुछ भी हुआ तो वह अधर्म कहलायेगा। अब अधर्म तो अधर्म ही होता है। अधर्म - कुकर्मों में उलझाकर मानव को मानवता से दूर ले जाता है और बुराईयों को अपनाने का कारण बनता है। ऐसा न हो इस हेतु सजनों समझो कि अपने आहार-विचार व व्यवहार में सात्विकता अपनाने हेतु, सर्वप्रथम अपने साथ जबरदस्ती करनी पड़ेगी और आत्म-नियन्त्रण रखना होगा। ऐसा करने से कुछ समय पश्चात जब अन्तर्घट के वातावरण में परिवर्तन का अनुभव करोगे तो निःसन्देह आपको

अच्छा लगने लगेगा और फिर सद्स्वभाव में बने रहना आपकी प्रकृति के अन्तर्गत हो जाएगा और आपकी मौज ही मौज हो जाएगी। आशय यह है कि फिर आप इन्सानियत में आ, अफुर हो जाओगे और आपके लिए अपनी पहचान करनी आसान हो जायेगी। अतः अब हर सजन ने दृढ़ संकल्प होने का निश्चय लेना है और ऐसा करके, केवल अपना ही नहीं अपितु अपने पूरे परिवार का सजन बनना है। उन्हें भी इस वायदे पर खरा उतरने के लिये जाग्रत करना है। फिर देखना कि जीवन कितना आनन्दमय हो जाएगा। अब ध्यान से भजन सुनोः-

महाबीर जी नाल प्रीत लगा सुरति, हुन अपना आप बना सुरति।

तू अपना आप भुलाया ए, हुन रघुनाथ जी नाल प्रीत लगा सुरति।

बखेड़ियाँ विच चित्त न लाईं, तू अपना रूप संभाल सुरति।

क्यों निम दा बूटा लाया ई, हुन अंब दा बूटा लगा सुरति।

कौड़याई नू दिलों हटा ही दे, अमृत दा प्याला बना सुरति।

हुन विष नूं दिलों हटा ही दे, अमृत दा प्याला बना सुरति।

अमृत दा प्याला पी सुरति जन्म मरण तू अपना बना सुरति।

हुन वैर विरोध हटा सुरति, प्रीति हरि चरणां विच ला सुरति।

सत्य शास्त्र दा तू विचार करीं, बली नाम दी ध्वनि लगा सुरति।

संसार दे वल हुन न जावीं, बली रस्ता दिता ए दिखा सुरति।

महाबीर जी दे चरणां विच प्रीत लांवी, सियाराम नू देसन मिला सुरति।

हुन बाहर दे मन्दिर हटा सुरति, तू अन्दर मन्दिर बना सुरति।

रघुनाथ जी दे चरणां दे विच राहवीं, तू सुखां दी उमर बिता सुरति।

बली दा रघुनाथ जी दे नाल प्यार सुरति, देनगे चरणां विच बहला सुरति।

उन्हां नू पीले वस्त्र पहना सुरति, उन्हां नू मस्तक तिलक लगा सुरति।

सांवले चरणां विच तू मस्त रहीं, उन्हां दी लीला अपरम्पार सुरति।

अचरज उन्हां दी लीला ए, जिदा अन्त न पारावार सुरति।

ए दासी चरणां दे विच रहे, दासियाँ नू चरणां विच लगा सुरति।।

सजनों सच्चेपातशाह जी इस भजन के अंतर्गत जगत में उलझी हुई, सुरत को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि हे सुरति ! जगत में उलझकर अपने वास्तविक अस्तित्व को मत भूल। अपने अस्तित्व में आने के लिये सजन श्री शहनशाह हनुमान जी संग प्रीत लगा ले और उनके वचनों पर चलते हुए अपना यथार्थ स्वरूप पहचान ले। फिर यथार्थ स्वरूप में आते ही, जो 'आत्मा में परमात्मा' है, उस संग त्रिलोकी के सिंहासन पर सुशोभित हो जा। सजनों हमारे लिये भी यही बनता है कि अपने ख़्याल/सुरत को मनमत अनुसार चलने से रोक कर, सद्मार्ग पर आने के लिए प्रेरित करें और फिर ऐसा सुनिश्चित कर सीता महारानी जैसा आदर्श स्थापित कर दें। इस संदर्भ में जैसा कि ज्ञात ही है कि सीता महारानी के जीवन में चाहे कितने ही भारी संकट या दुःख-सुख आये, उन्होंने अपने ख़्याल को आत्मा में शोभित परमात्मा संग सदा जोड़े रखने का पुरुषार्थ दिखाया। आशय यह है कि चाहे जगत के किसी भी तत्त्व, जैसे कि रावण ने उनके ख़्याल को भटकाकर अपने साथ जोड़ने हेतु कितने ही प्रपंच रचाये, पर वह कदापि उसमें नहीं उलझी। उनकी तरह हमारे लिए बनता है कि हम भी जगत के विषयों व प्रलोभनों से विमुक्त रह, आजीवन अपनी इलाही शान में स्थिर बने रहें। सजनों यही महानता को प्राप्त होने की बात है। अगर सच्चेपातशाह जी इस महानता को प्राप्त कर सकते हैं तो हम-आप क्यों नहीं कर सकते? जब उन्होंने भी मानव रूप धारकर यह कर दिखलाया तो हम मानव रूप धारी उनसे प्रेरणा ले ऐसा क्यों नहीं कर सकते? आप ही बताओ कि ऐसा करते समय क्या उन्होंने गृहस्थाश्रम सुचारू ढंग से

नहीं निभाया?

'निभाया जी'।

निभाया तो हम क्यों अपने गृहस्थाश्रमों में इतने उलझे पड़े हैं? इस सन्दर्भ में सजनों मानो कि आत्म-विश्वास के साथ, आत्म-निर्भरता से ऐसा सुनिश्चित करने पर हम सजन भी सब काम सुचारू ढँग से करते हुए, सद्मार्ग पर निरन्तर डटे रह सकते हैं। यहाँ जानो कि यह

सद्मार्ग है - सुरत/ख़्याल का सत्य में प्रवेश करना यानि ख़्याल का शब्द में प्रवेश कर, परमात्म स्वरूप को प्राप्त कर लेना। तभी तो इस द्वारे पर 'शब्द है गुरु' का विधान है। सो अपना जीवनोद्धार सुनिश्चित करने हेतु सबने होश में आना है। अब आगे कीर्तन सुनोः-

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

युक्ति जै प्रवान कीती आ-आ-आ, ओहदी भक्ति वी सावधान होई।

विचार शब्द जैं पकड़ लिया, ओहदी दुनियां ते उच्ची शान होई।।

बात बताऊं है सुनने वाली आ-आ-आ, बात बताऊं उसे जेहड़ा सुनने योग्य होवे।

किस तरह बताऊं उसे साजन जी, जेहड़ा पुत्र ही अयोग्य होवे।।

(श्री साजन जी कह रहे है)

ओ दाता हनुमान जी आ-आ-आ, जेहड़ा शब्द विचार बता रहे हो।

जै शब्द विचार पकड लिया ओहदे सारे रोग हटा रहे हो।।

चरण शरण दयालु श्री राम जी दी आ-आ-आ, साडी अरज सुणो जरूर।

रोग हटे संकट मिटे,एहो साडी अरजी करो मन्जूर।।

रोग सारे मिट गये आ-आ-आ, मिट गया ओहदा परिवार।

मुक गई ओहदी आरबला, जेहड़ा रोग रिहा हाई दिखाल।।

रोग हटे कलेश हटे गई विपत्ति सारी आ-आ-आ, सुख सम्पत्ति घर में बसे।

जित्थे खड़े हो गये कृष्ण मुरारी, कृष्ण मुरारी चतुर्भुजधारी।।

(श्री महाबीर जी कह रहे है)

ओ बोल उठे हनुमान, इस विच जीवां दा कल्याण।

अपना आप लवो पहचान, इस विच जीवां दा कल्याण।।

ओ खुशियां माणे ओ हो, ओ खुशियां माणे वाह वाह।

ओ श्री राम जी दा बन गया यार, कैसा सोहणा पावे सिंगार।

ओ देख लवे सारा विस्तार, ओ रंग माणे वाह वाह, ओ रंग माणे ओ हो।।

(यह शब्द जनता बोल रही है)

भगवान बैठे कुर्सी ते जनता कैसी हर्षाई ।

के अखियाँ मिच वे गईयां, ओ कैसी रोशनी आई।

के अखियाँ मिच वे गईयां, ओ कैसी रोशनी आई।।

लालसा हाई श्री राम दीदार दी,नहीं कीती असां कमाई।

के अखियाँ मिच वे गईयां, अखियाँ कमजोरी दिखाई।

के अखियाँ मिच वे गईयां, अखियाँ कमजोरी दिखाई।।

हम पूछते हैं, क्या आपका दिल नहीं चाहता कि आप हर रोग और क्लेश से मुक्ति पा जायें? रोग-ग्रस्त होकर आजीवन क्लेशों में जीना क्या आपको कठिन प्रतीत नहीं होता जबकि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द विचार रूपी औषधि आपके पास उपलब्ध है। हम पूछते हैं कि उस औषधि का सेवन करने में क्यों सकुचाते हो? यही कारण है कि हर समय आपकी आँखें सपाट खुली रहती हैं और आँखों के मार्ग से यह जगत मन में घर करता जाता है। इस तरह मन में रोग-क्लेश दिखाने वाला 'काम' सदा जाग्रत रहता है और छोटी-छोटी बात पर क्रोध उत्पन्न होता है। 'काम' जाग्रत होता है तो लोभ उठता है, लोभ पूर्ति होती है तो मोह व 'मैं-मेरी' का भाव यानि अहंकार बढ़ता है। सजनों यह कैसा अहंकार है जिसके वशीभूत हो अपनी यथार्थता में आना ही नहीं चाहते? अपने साथ यह

कैसी दुश्मनी निभा रहे हो? इस संदर्भ में सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ आपको औषधि बता रहा है पर कोई ज़बरदस्ती तो आपको रोग-युक्त व तनाव-युक्त जीवन से छुटकारा नहीं दिला सकता। रोग-मुक्त होने हेतु औषधि का सेवन तो खुद ही करना अनिवार्य होता है। अतः अगर जीवन में बहुत परेशान हो चुके हो और तनिक सी भी इच्छा है कि और परेशानी न भोगनी पड़े तो शास्त्र विहित शब्द विचार पकड़ो, उनका सेवन करो। इसका मतलब है कि उन्हें धारणकर आचार-विचार-आहार में उतार लो। जानो मात्र शब्द विचारों के सेवन से ही सब कुछ ठीक हो जायेगा और सभी रोगों का नाश हो जायेगा। सजनों मन को शान्ति प्रदान करने वाली यह अचूक औषधि है और उसके लिये मेहनत तो करनी ही पड़ेगी यानि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का अध्ययन-चिन्तन-मनन व विवेचन तो करना ही पड़ेगा। इतना सा करने पर आपका परिवर्तन स्वीकार्य होगा। सो अपने सजन बनो ताकि आपका मन इस प्रकार प्रकाशमय हो जाये कि संसार की तरफ से आपकी आँखें बन्द हो जायें यानि सब कुछ दृष्टिगत होते हुए भी आपके अन्दर संसार प्रवेश न कर पाए। जानो यह एक कला होती है, जिसके अंतर्गत सब कुछ देखते हुए भी उसको प्राप्त करने की लालसा अन्दर पैदा नहीं होती। वैसे भी इलाही शोभा के सन्मुख यह सब कुछ तुच्छ है यानि जो हमारी इलाही शोभा है उसके सामने तो यह संसार कुछ भी नहीं क्योंकि हमारा स्वरूप तो अमरता का प्रतीक है जबकि यह संसार नश्वरता का प्रतीक है। अब इस चयन पर ही आपके अपने जीवन का विनाश अथवा उद्धार निर्भर करता है। इस संदर्भ में ज्ञात हो कि ईश्वर ने मनुष्य को यह अधिकार प्रदान किया हुआ है और उसे जनाया हुआ है कि हे इन्सान ! मेरी शक्ति कुदरत ने तुझे मानव चोला देकर इस जगत में भेजा है और साथ ही आत्मिक ज्ञान भी प्रदान किया है। अब चाहे तो उसे धारणकर अपना उद्धार कर ले या फिर चाहे तो उससे विमुख रह जन्म मरण में उलझा रह, यह तेरी अपनी मर्जी है। यहाँ हम तो यही कहेंगे कि अपने ख़्याल को अपने घर में बसने दो और औरों को भी बसने दो तथा उन्हें प्रेरित करो कि उनका ख़्याल भी उनके घर में बसा रहे। यह सजनता है। अब ध्यानपूर्वक कीर्तन सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

पुरषार्थ सजनों यत्न करो, ओन्हां इक सवाल समझाया है।

अनेक सवाल छुड़ाये के ओ नगर निवासियो, महाबीर जी पर उपकार दिखाया है।।

श्री रामचन्द्र जी दा प्यारा देखो, कैसी हिम्मत लड़ाई हो।

फ़स्ट निकले सारी नगरी ऊपर, कैसी कीती कमाई हो।।

युग युग फ़स्ट निकलदे आये, फ़स्ट निकलन बलधारी हो।

तेज प्रताप ताकत नूं देखो, कैसे हिन सुखकारी हो।।

कैसियां सुखालियां रीतियां, कैसे सुखाले सवाल हो।

शब्द विचार सौखा है सवाल इन्सानों, हो गए दीन दयाल हो।।

जगदाता साडा फ़स्ट, फ़स्ट निकलो पकड़ो ओन्हां दी चाल हो।

फ़स्ट निकलो ते फेल न होवो, फेल हो के न फिरो गंवार हो।।

उस दाते हनुमान जी दी नगर निवासी करन बढ़ाई हो।

श्री रामचन्द्र जी दी उपमा गा गा, त्रिलोकी है शरणाई हो।।

ध्वनिः-

सजनों फ़स्ट दी करो तैयारी।

फेल जेहड़ा हो गया, ओ उमरा राहवे भिखारी।।

सजनों कितने सुन्दर ढँग से यह प्रस्तुति आपके सामने रखी गई है ताकि आपको एक-एक शब्द के अर्थ की समझ आ सके यानि वह अर्थ आपके दिल में उतरे व ठहर जाये और आपकी इच्छा शक्ति फ़र्स्ट निकलने के प्रति इतनी प्रबल हो जाये कि आप परिवर्तन स्वीकार कर फेल होने के स्थान पर फ़र्स्ट निकलने हेतु दृढ़-संकल्पी हो जाओ। इस विषय में सजनों हर इतवार को केवल सुनते ही न रहा करो अपितु जो सुनते हो उस पर क्रिया भी किया करो ताकि सुपरिणाम प्राप्त हो। सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे से आज आपको आवाहन मिला कि हे सजनों ! अमोलक जीवन की यथार्थता को समझो और इसे वृथा मत गँवाओ यानि हारो मत।

इस परिप्रेक्ष्य में अगर हर सुरत सौभाग्यवती बनना चाहती है तो उसे स्वाभाविक भाव परिवर्तन हेतु मेहनत तो करनी ही पड़ेगी और साथ-साथ आत्म-नियन्त्रण भी रखना पड़ेगा ताकि ऐसा कोई भी संसारी भाव न सता सके जिस कारण मेरा पुरुषार्थ सफल होने से रह जाये। यह सतर्कता तो अनिवार्य है। इसके लिये सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने चैत्र के यज्ञ के उपरान्त समयबद्ध उन्नति करने का विधान रखा हुआ है। अगर हम उनके मननकार होकर उसी निर्धारित समय के अन्दर, जितना बदलाव वह चाहते हैं, वो नहीं करते तो मार तो पड़ेगी ही पड़ेगी, यम की त्रास तो भुगतनी ही पड़ेगी क्योंकि मौत से केवल वही बचा सकते हैं और मोक्ष प्राप्त करने की युक्ति भी वही बता सकते हैं। उन पर हमारा अटल विश्वास होना चाहिये। तो इस सन्दर्भ में उन्होंने नियम बना दिया कि हे कलुकाल के भाव-स्वभाव में उलझे हुए सजनों ! अपना आत्म-सुधार व आत्मोद्धार करने हेतु हर तीन महीने के अन्दर बताये गये पाठ्यक्रम के अनुसार थोड़ा-थोड़ा परिवर्तन अपने अन्दर करो। चैत्र के यज्ञ के पश्चात अब तक जो परिवर्तन वांछित था, वह हम आपको अब बताने लगे हैं। तो अपना-अपना आत्म-निरीक्षण कर लेना कि क्या आप उतना परिवर्तन कर चुके हो और आगे का सबक़ जो २१ जुलाई की मीटिंग पर आपको मिलना है, क्या उसके लिये पूरी तरह से स्वतन्त्र और मजबूत हो?

चैत्र के यज्ञ से लेकर सावन की मीटिंग तक की पढ़ाई का स्वरूप

पैगाम वाले दोनों कीर्तनों की वाणी पर अमल करते हुए, अन्दरुनी वृत्ति और बैहरुनी वृत्ति दोनों का रोना-झुखना बन्द करना है और जिह्वा स्वतन्त्र और अफुर अवस्था को धारण करना है।

सजनों अगर यह कर चुके हो तो अगला सबक़ जो २१ तारीख को मिलने वाला है, उसे सरलता से कर पाओगे। इसके विपरीत यदि अभी तक ऐसा करने का पुरुषार्थ नहीं दिखाया यानि लापरवाही की है, अपनी किस्मत पर घात लगाई है तो आगे का आप कभी नहीं कर पाओगे। इस तरह चैत्र के यज्ञ पर जो आपका परिणाम निकलने वाला है, वह कदापि फ़र्स्ट का नहीं निकलेगा। इस तरह आप फेल का ही नतीजा लाओगे। यहाँ फेल के नतीजे के बारे में अभी आपने सुना ही है कि:-

सजनों फ़स्ट दी करो तैयारी।

फेल जेहड़ा हो गया, ओ उमरा राहवे भिखारी।।

इस तरह उसका जीवन बेकार हो जाएगा। इस विषय में सजनों हम तो यही कहेंगे कि अभी भी २१ जुलाई तक समय है। इस दौरान अब ज्यादा समय लगाकर पूरी दिनचर्या के समय अपने पर पूर्ण अंकुश रखो और जिह्वा स्वतन्त्र कर अफुर हो जाओ ताकि अगला सबक़ व्यवहार में लाना आसान हो जाये। फिर कह रहे हैं:-

सजनों फ़स्ट दी करो तैयारी।

फेल जेहड़ा हो गया, ओ उमरा राहवे भिखारी।।

सजनों फेल होने पर तो आपका सत्संग में आना भी व्यर्थ हो जाएगा। मतलब कि आप सत्संग में आये भी और सबने देखा, फिर भी फेल हो गये। निश्चित रूप से ऐसा नतीजा दिखाने पर आपके परिवार वालों पर दुष्प्रभाव ही जायेगा और वे सब आपकी निन्दा करेंगे। यह अत्यन्त शर्म की व अपने साथ आप द्रोह करने की बात होगी। सजनों ऐसा होने पर सांसारिक रोगों से मुक्त होना असम्भव हो जाएगा। ऐसा न हो इस हेतु सजनों समय रहते ही अपनी हिम्मत को जाग्रत करो और इन्सानियत का पाठ पढ़कर समझदार बन जाओ।

इस सन्दर्भ में सजनों अब २१ तारीख तक अपना छूटा हुआ काम पूरा कर लेना और आपने सबको भी यह बता देना है कि २१ तारीख की मीटिंग में सभी ने आना है। इसके बाद ७ सितम्बर शनिवार को समभाव दिवस है, उस दिन आप सबने सपरिवार आना है और जिन-जिन के साथ आपका उठना बैठना है, उन दोस्तों, सहेलियों व संगी-साथियों को अपने साथ लेकर आना है। यही नहीं जो गुमराह होकर बाल-अवस्था के भक्ति-भावों में अटके हुए हैं, चाहे वह साधू-संत या महात्मा हैं, उनको भी अपने साथ ले आना ताकि उनको भी सतयुग के चलन से पूर्णतः परिचित करा दिया जाये। हर शहर वालों ने अभी से ही सात सितम्बर को आने का अपना प्रबन्ध कर लेना है। फिर कह रहे हैं कि सजनों आप अपने बच्चों को आगे लाओ और उनको स्वार्थ में उलझाकर उनके वैरी मत बनो। सो अब २१ तारीख तक का अपना होम-वर्क पूरा कर लेना है, आगे का फिर आपको बतायेंगे। इस विषय में सजनों हैरान-परेशान कमजोर होकर मत बैठे रहो अपितु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के संग जुड़ जाओ। ऐसा करने से अपने आप ताकतवर हो जाओगे और कह उठोगे:-

बोल महाबीर बजरंग बली जी की जय

ओ बजरंग बली जी की जय, ओ बजरंग बली जी की जय

बोल महाबीर बजरंग बली जी की जय

सजनों अब जो ग्रन्थ में से एक-एक शब्द सुना है, स्वाभाविक तबदीली के लिये सब मिलकर बोलोः-

जो शास्त्र द्वारा कहा गया है, हम उसे मानेंगे

जो शास्त्र द्वारा कहा गया है, हम उसे मानेंगे

जो शास्त्र द्वारा कहा गया है, हम उसे मानेंगे

इस संदर्भ में सजनों निश्चय लो कि अब के बाद चाहे कोई छोटा हो या बड़ा हो, सबको 'जी' करके बुलाना है। जैसे कि आओ जी, बैठो जी, खाओ जी। इसके अतिरिक्त किसी का नाम भी बुलाना हो तो 'जी' करके ही बुलाना है। बार-बार कहने के बावजूद भी आप सजन यह चाल नहीं पकड़ पाये। अब जानो जो यह चाल नहीं पकड़ना चाहता, वह कृपा करके सत्संग से उठकर बाहर चला जाये। इसमें शर्म की कोई बात नहीं अपितु यह धर्म की बात है क्योंकि भगवान सर्व-व्यापक हैं और प्रत्येक में उसका दर्शन करते हुए आदर सूचक शब्द का प्रयोग करना है, इस पर अब से खबरदार रहना।

आप अपने मकसद में कामयाब हों, इन्हीं शुभ कामनाओं सहित।